सं श्रो वी./जी.जी.एन /103-83/51783. —चू कि हरियाणा के राज्यपाल की राए है कि मसर्ज दीरोहाडाई श्रम एवं सेवासहकारी समिति लि रोहडाई, तह रिवाड़ो, जिला महेन्द्रगढ़ के श्रमिक श्री राम फल, तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है:

स्रोर चूं कि हरियाणा के. राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं:

इसलिए, ग्रव, श्रोद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की श्वारा 10 की उप-धारा (i) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसृह्या सं० :415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रिधिन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उसके सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्देष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राम फल, ड्राईवर की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो. वी./एफ-डी--/119-83/51797.--चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राए है कि मैसर्ज इण्डियन रेफरीजेशन इन्हर्स्ट्रीज 13/2 मथुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री निरंजन सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं:

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उष्टुक्क धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ध्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:

निया श्री निरंजन सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक हैं ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ओ़ वि०/जी.जी.एन 98-83/51804. -- चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज रूफ राईट प्रा० लिए गुड़गावां के श्रमिक श्री प्रताप सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भ्रीद्योगिक विवाद है:

ग्रीर चू कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं:

इसलिए, श्रब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्टितयम 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधसूचना स. 5415-3-श्रम/68/15254 दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधसूचना स. 11495-जी-श्रम/57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रिशीन गठित श्रम न्यायलय फरीदाबाद को विवाद ग्रस्त या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निदिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रिमक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सन्बन्धित मामला है:

क्या श्री प्रताप सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह कि स राहत का हकदार है ?

सं. भौ.वी./जी.जी.एन/96-83/51811 — चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राए है कि मैसर्ज ७फ राईट प्राइवेट लि॰, गुड़गांवा के श्रमिक श्री कृष्ण तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इस के बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल निवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना नांछमीय समझते हैं:

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद श्रिष्ट्रियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीवस्थना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना संख्या 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उनत ग्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जोकि उनत प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादगस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भ्रयवा सम्बंधित मामला है :—

क्या श्री कृष्ण की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं ग्रो॰वि॰/जी.जी.एन/95-83/51818 — चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राए है कि मैसर्ज रूफ राईट प्रा॰ लि॰ गुड़गावां के श्रमिक श्री राज सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिण्ट करना वांछनीय समझते है:

इसलिए, ग्रब, भौद्योगिक विवाद मिन्नित्यम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिक्षित्वना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा इक्त प्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रजन्मकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राज सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ओ.वी./जी.जी.एन/97-83/51832.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राए है कि मैसर्ज रूफ हाईट प्राईवेट क्लि॰ गुड़गांव के श्रीमक श्री बाल किशन तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ; श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना, वांछनीय समझते हैं:

इसलिए, अब, प्रोद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-घारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिमुचना सं 5415-3-अम-68/15254, दिनाक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिण्ट करते है, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत सथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री बाल किशन की सेवाझों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वी./ग्रम्बाला/29-38/51916.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल, की राए है कि मैसर्ज सचिन इन्टर प्राईजीज 11/5 डी एल.एक., मयुरा रोड़, फरीदाबाद, के श्रीमिक श्री जय प्रकाश तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामने में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

ग्रीर जुंकि हरियाणा के राजपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है :

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनयम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाण। के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना स. 5415—3 श्रम-68/15254 दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना स. 11495-जी-श्रम/57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनयम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को नीचे निदिष्ट विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित मीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निदिष्ट करते है: जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री जय प्रकाश की सेवाझों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहतका हकदार है ?

वी ० एस०, चौधरी,

उप सचिव हरियाणा सरकार · श्रम विभाग ।